International Journal of Applied Research 2021; 7(9): 82-84

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(9): 82-84
www.allresearchjournal.com
Received: 01-07-2021
Accepted: 03-08-2021

डॉ. नीतू कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नीतू कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

पुष्पजी की रचनाओं का वैशिष्ट्य

डॉ. नीतू कुमारी

सारांश
हिंदी साहित्य वह सुरम्य उद्यान है, जहाँ नाना प्रकार के पौधे, पेड़, लताएँ, झाड़ियाँ, दूर्वादल रूपी साहित्य विराजमान हैं। इनमें नाना प्रकार की कोमल–कठोर, लाल–हरी–पीली पत्तियाँ, नाना रूप–रंगों के फूल और उनकी नाना प्रकार की सुगंध, तितलियाँ, भौंरे, पक्षी, तालाब, आसन, पूजास्थल, योगस्थल, भ्रमणस्थल, ध्यानकेंद्र रूपी पड़ाव आदि हैं। इन्हीं में से एक देदीप्यमान, चित्ताकर्षक, प्रभावोत्पादक वृक्ष हैं– रॉबिन शॉ पुष्प। जितना ही इनका व्यक्तित्व अमल, विमल, धवल, निर्मल और उज्जवल है उतना ही इनका कर्तृत्व भी अनुकरणीय, वंदनीय और प्रशांसनीय है। कर्तृत्व अर्थात् कर्ता का धर्म दर्शानीय है।

कूटशब्दः पुष्पजी, रचनाओं का वैशिष्ट्य, अनुकरणीय, वंदनीय

प्रस्तावनाः
पुष्पजी बहुआयामी साहित्यकार हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं पर इनकी लेखनी मस्ती के साथ चली है और पाठक को पूरी की पूरी मस्ती मिली है और सबसे बड़ी बात इसमें गति है, लय है, प्रवाह है, चित्रमयता है, बिम्ब विधान है, सौंदर्य है, माधुर्य है, जिज्ञासा है, प्रष्न है, उत्तर है, विवेचना है और समाज तथा पाठक के लिए मानवीय मूल्य के उद्घाटन के साथ कर्त्तव्यबोध है और है– साहित्यिक समयानुकूल क्रियाशीलता और अनुशासन।
पुष्पजी कवि हैं, आधुनिक कथाकार हैं, उपन्यासकार है, लघुकथाकार हैं, संस्मरणकार हैं, आत्मकथाकार हैं, गीतकार हैं, पटकथाकार हैं, नाटककार हैं, टेलिफिल्म कथाकार हैं।
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पुष्पजी की पार्थिव काया भले ही आज नहीं है लेकिन उनकी यश : काया दिग्दिगन्त को सुरभित कर रही है। इनका साहित्य समाज के लिए धरोहर है, पथ–प्रदर्शक है, आत्मचिंतन, आत्मपरीक्षण और आत्म मूल्याकंन का साधन भी है। इनके साहित्य की प्रासंगिकता यह है कि हम कहीं न कहीं इनके पात्रों के बीच में होते है। इनकी साहित्यिक घटनाएँ कहीं न कहीं समाज में आए दिन घटित होते देखते हैं। इस प्रकार इनका साहित्य जीवंत, समीचीन, प्रासंगिक, और औचित्यपूर्ण है।
कहा गया है– ''गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति''।
अर्थात् गद्य कवियों की कसौटी है। क्या गद्य, क्या पद्य, समान अधिकार और भाव के साथ इन्होंने विभिन्न विधाओं के साथ न्याय किया है।
बाँसुरी के संबंध में वर्त्तमान भारतीय प्रधानमंत्री के गुरु ने कहा था, ''बजा सको तो बाँसुरी नहीं तो लकड़ी।'' साहित्य यदि समाज का दर्पण नहीं हो सका। समाज का हितकारी नहीं हो सका, मानसिक खुराक नहीं हो सका, चेतना जगा नहीं सका, मानसिक विकृति दूर नहीं कर सका, मानसिक भावोन्मोचन नहीं कर सका तो उसे साहित्यिक बोध की कृति अथवा साहित्य कहने में संकोच होना चाहिए।
राजमार्ग पर सरपट चलना आसान है, चाँदी का चम्मच लेकर जन्म लेनेवाले का जीवन आसान है लेकिन ऊबड़–खाबड़ घर्षण वाले पथ पर चलते हुए कंकड़–पत्थर–काँटों की चुभन और पैरों में निकल आये छाले–फफोले की चिंता किए बिना शिखर पर पहुँच जाना, लक्ष्य को पा लेना मनुष्य होने की, साहित्यकार होने की सार्थकता है।
उपेक्षित, मान–मर्दित, पददलित, शोषित, पीड़ित, सर्वहारा, असहाय लोगों के लिए पुष्पजी का व्यक्तित्व एक विशिष्ट उदाहरण है। शिक्षा सद्गुणों को उभारती है। इसके सम्यक् दर्शन इनकी माँ की आकांक्षा, प्रेरणा, देखभाल और जुझारूपन में किये जा सकते हैं। साथ ही इनके लेखन की नींव छात्र–जीवन के पहले साहित्यिक प्रेरक गुरु त्रिशूलधारी जी है, उनके व्यक्तित्व की आभा, प्रेरणा, स्नेह, शिक्षा और आशीर्वाद का प्रतिफल है पुष्पजी का साहित्यिक दुनिया में पदार्पण। हाँ, माँ की प्रबल आकांक्षा का प्रतिफल भी कि मेरा बेटा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की तरह मूर्द्धन्य विद्वान हो,

इसलिए नाम भी रवीन्द्रनाथ रखा जो धार्मिक परिवर्तन से रॉबिन हो गया।

शिक्षा–पथ पर अनेक मूर्द्धन्य शिक्षकों, प्राध्यापकों, बुजुर्गों, शुभचितकों, कलाकारों, कवियों, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, निर्देषकों, निर्माताओं का उत्साहवर्द्धक सान्निध्य और सहयोग मिला, निखरते गए, चमकते गए, बढ़ते गए, लिखते गए, अपने अनुभवों ओर कल्पनाओं का सहारा लिया, आकाशवाणी और दूरदर्शन के विद्वान् अधिकारियों से भाषिक उच्चारणों और प्रस्तुतियों को सीखा, अहंकार को दूर रखा, सीखने का लक्ष्य रखा और अनमोल साहित्यकार बन गए। और हाँ, अलंकार, पुरस्कार और सम्मान पाने की लालसा को मन से निकालकर सच्चे, आदर्श, यथार्थ, प्रगतिशील, आधुनिक और सक्रिय साहित्यकार बनने के लिए जीविका के लिए कागज, कलम और स्याही को ही चुना। तपे–तपाए साहित्यकार नींव की मजबूती पर ध्यान देते हैं, कंगूरा बनने की चाहत मन में आयी ही नहीं। कर्त्तव्यबोध, मानवमूल्य और मानवतावादी दृष्टिकोण रखा। 'भला कर, भला होगा' को जीवन का आदर्श बनाया। 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' को ध्यान में रखकर आत्म संतुष्टि के साथ लेखन करते रहे। किसी साहित्य या साहित्यकार की निंदा, उनसे ईर्ष्या से अपने को बचाया। साहित्य पाठकों के लिए हो और पाठकों को समयानुसार उत्तम साहित्य मिले, जिसमें समाज की झाँकी हो, इसपर ध्यान केंद्रित रखा।

साहित्य समीचीन हो, प्रासंगिक हो, औचित्यपूर्ण हो और सरलता, सुगमता, सहजता, सुबोधता और अर्थ गांभीर्य से परिपूर्ण हो, इस पर चित्र लगाए रखा। अपनी अभिनव शैली हो जिससे अपना व्यक्तित्व झलक उठे, अपनी एक विशिष्ट पहचान हो, उसे लेखन की आत्मा समझकर रोचकता और लालित्यबोध के साथ साहित्य की आत्मा को अक्षुण्ण रखा। इस प्रकार अपने नाम के अर्थबोध के अनुकूल पुष्पजी पुष्प की भाँति चित्ताकर्षक बने रहे और साहित्य गगन को सुवासित करते रहे और आज भी सुरभित, मनभावन और विवेच्य बने हुए हैं और आनेवाली पीढ़ियों में भी समादरणीय बने रहेंगे। इस प्रकार पुष्पजी अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व के साथ अखंडित न्याय करके भूरि–भूरि प्रशंसनीय, अनुकरणीय और स्मरणीय बन चुके हैं।

पुष्पजी का औपन्यासिक साहित्य उपन्यास कला की दृष्टि से समीक्षनीय और पठनीय है तथा लक्ष्य को प्राप्त है। हिंदी–उपन्यास के क्षेत्र में इनके उपन्यास यथा–'नहीं लौटनेवाला रास्ता', 'देहयात्रा', 'वंश–वृक्ष', 'यहाँ चाहने से क्या होता है', 'दुल्हन बाजार' और 'बंद कमरे का सफर' सफल उपन्यास हैं। इनमें यथार्थ भी है, आदर्श भी है, शिक्षा भी है, उद्देष्य भी है, चरित्र भी है, संवाद भी है, कथानक भी है, शिल्प वैशिष्ट्य भी है, सामाजिकता भी है, अध्यात्म भी है, दर्शन भी है, मनोविज्ञान भी है, पारिवारिकता भी है, राष्ट्रीयता भी है, मनोवृत्ति भी है, चित्रात्मकता भी है, राजनीति भी है और सबसे बढ़कर जिज्ञासा और प्रष्न भी है और कर्त्तव्यबोध के साथ समयानुकूल मानवमूल्य और मानवता भी है, धार्मिकता भी है लेकिन पंथ–संप्रदाय–जाति–धर्म की संकीर्णता नहीं है। ये सब इनकी औपन्यासिक कला के वैशिष्ट्य हैं।

पाठक इनके उपन्यास को धैर्य और चाव से पढ़ लेंगे, ऐसी विशेषता है। ''हाँ, पढ़ने वाले धैर्य से सब पुस्तक पढ़ लेंगे तो अपने–अपने मौके पर सब भेद खुलता चला जाएगा और आदि से अंत तक सब मिल जाएगा।'' इनके उपन्यास सामाजिक चेतना से युक्त 'भाव–प्रधान' उपन्यास कहे जा सकते हैं।

'पाश' की काव्य पंक्तियाँ इनके उपन्यास पर सटीक बैठती हैं–

''हम लड़ेंगे, जब तक दुनिया में
लड़ने की जरूरत बाकी है।
हम लड़ेंगे कि लड़े बगैर
कुछ नहीं मिलता।''

पुष्पजी के उपन्यास हिंदी साहित्य के गौरव कहे जा सकते हैं। ''सब मिलाकर हिंदी–उपन्यास का भविष्य निराश करनेवाला नहीं है। यह कहना कि टेकनीक ओर शिल्प का मोह जीवन–दर्शन के ठहराव या दिशाहीनता का सूचक है, अपने स्थान पर सही है; किन्तु ऐसी स्थिति का उत्पन्न होना आज की नियति है और हिन्दी उपन्यासकार इस स्थिति को सजगता के साथ स्वीकार रहा है।'' अतः विष्व साहित्य के स्तर पर पुष्पजी ने अपने उपन्यास को प्रतिष्ठित किया है।

कहानी–कला की दृष्टि से पुष्पजी की कहानियाँ अत्यंत ही रोचक है। शीर्षक, कथानक, चरित्र, संवाद, देशकाल परिस्थिति, भाषा शैली और उद्देष्य सशक्त हैं। शैली की दृष्टि से ये कहानियाँ आधुनिक सक्रिय कहानियाँ कही जा सकती है। ये चरित्रप्रधान, वातावरण–प्रधान, कथानक–प्रधान और कार्य–प्रधान कहानियों के समावेषित रूप हैं। इनमें यथार्थ भी, आदर्श भी, सामाजिकता भी है, दार्शनिकता और मनोवैज्ञानिकता भी है। इनमें व्यक्ति की प्रतिष्ठा के साथ–साथ भावुकता, जीवन–चेतना, आधुनिकता–बोध और सांकेतिकता भी हैं। ''मानवता के प्रति अखंड आस्था समृद्ध विवेक, यथार्थ के सीधे साक्षात्कार रचनादृष्टि की निर्मलता तथा अपनी समृद्ध परंपरा की सीमा में आधुनिकता के स्वीकार से ही कुछ हो सकता है।'' पुष्पजी का कथा–संसार निष्चय ही प्रभावोत्पादक और हृदयग्राही है।

पुष्पजी का काव्य–संसार काव्य–प्रयोजन की सार्थकता को अपने में समेटे हुए है। छंद–विधान की सार्थकता और इसके प्रति आग्रह के भाव दृष्टिगोचर होते हैं और इनमें मानवीय संवेदनाओं के साथ समसामयिकता के कारक भरे पड़े हैं। अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति काव्य–गुणों से परिपूरित इनकी कविताएँ आधुनिकता, समसामयिकता के साथ प्रभावोत्पादक, चित्ताकर्षक, मनभावन और सहज सुग्राह्य हैं।

निष्कर्ष

पुष्पजी के रेडियो नाटक, संस्मरण, लघुकथाएँ, व्यंग्य रचनाएँ, साक्षात्कार और आत्मकथादि प्रशंसनीय हैं। टेलिफिल्म कथा, पटकथा, गीत आदि अपने–आप में पठनीय और विचारणीय हैं। कर्म–पथ में मनीषियों की प्रेरणा इनके लिए संबल और पाथेय सिद्ध हुए हैं। 'पाप से घृणा करो, पापी से नहीं' यह भाव इन्होंने सीखा लोकनायक जयप्रकाश नारायण से। हरिशंकर परसाई, निर्मल वर्मा, नीरज, भगवतीचरण वर्मा, दिनकर, राजेंद्र यादव, 'रेणु' के अखंड साहित्यिक सहयोग इनके लिए सौभाग्यवर्द्धक सिद्ध हुए। इन्होंने जिनसे जो कुछ सीखा, उसे अक्षरशः कृतज्ञतापूर्वक स्वीकारा है। कोई आडंबर, कट्टरता, रूढ़िवादिता, अंधविष्वास, अंधभक्ति, प्रदर्शन दिखाने का काम इन्होंने नहीं किया है। करनी और कथनी में समता रही है। सादा जीवन, उच्च विचार के साथ इन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा पूरी की है। इसमें इनकी माता, पत्नी, संतान, अपेक्षित रिश्तेदारों और मित्रों का सहयोग मिलता रहा। कुल मिलाकर साहित्य की विभिन्न विधाओं पर पारदर्शिता के साथ प्रवाहपूर्ण लेखनी चलानेवाले राबिन शॉ पुष्प एक सफल साहित्यकार के रूप में निर्विवाद परिगणित किये जा सकते हैं एवं हिन्दी–साहित्य के स्वर्णिम पृष्ठों में स्थान पाने के अधिकारी हैं।

संदर्भ

1. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली, खण्ड–1 (उपन्यास) : लेखक– रॉबिन शॉ पुष्प, संपादक– डॉ. गीता पुष्प शॉ एवं प्रो. जॉयस शीला शॉ, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2014
2. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली, खण्ड–2 (कहानियाँ) : लेखक– रॉबिन शॉ पुष्प, संपादक– डॉ. गीता पुष्प शॉ एवं प्रो. जॉयस शीला शॉ, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2014
3. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली, खण्ड–3 (आत्मकथा गवाह बेगमसरायँ) : लेखक– रॉबिन शॉ पुष्प, संपादक– डॉ. गीता

पुष्प शॉ एवं प्रो. जॉयस शीला शॉ, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2014

4. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली, खण्ड–4 (विविध–1) : लेखक– रॉबिन शॉ पुष्प, संपादक– डॉ. गीता पुष्प शॉ एवं प्रो. जॉयस शीला शॉ, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2014
5. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली, खण्ड–5 (विविध–2, बाल–साहित्य) : लेखक– रॉबिन शॉ पुष्प, संपादक– डॉ. गीता पुष्प शॉ एवं प्रो. जॉयस शीला शॉ, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2014
6. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली, खण्ड–6 (विविध–3) : लेखक– रॉबिन शॉ पुष्प, संपादक– डॉ. गीता पुष्प शॉ एवं प्रो. जॉयस शीला शॉ, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2014